भारत का उभरता वित्तीय संकट

द हिन्दू

पेपर- III (अर्थव्यवस्था)

तेज ऋण वृद्धि एक मोहक गीत की तरह है। यह अर्थव्यवस्थाओं को समृद्धि के वादे से लुभाता है, लेकिन उन्हें संकट में ले जाता है। प्रत्येक वित्तीय उछाल को वित्तीय नवाचार और अच्छे समय की कहानी के रूप में तैयार किया जाता है। लेकिन प्रत्येक नई कहानी सिर्फ एक उन्माद है, अर्थशास्त्री रॉबर्ट शिलर के शब्दों में, यह 'अतार्किक उत्साह' है। जैसा कि अर्थशास्त्री कारमेन रेनहार्ट और केनेथ रोगॉफ ने अपने प्रसिद्ध वित्तीय मूर्खता के इतिहास में समझाया है, सरकारें और बाजार प्रतिभागी पिछले संकटों को 'इस बार अलग है' मंत्र का हवाला देकर खारिज कर देते हैं।

भारत में ऋण देने में तेजी से वृद्धि वित्तीय अस्थिरता की ओर ले जा रही है। यह एक चेतावनी है कि अत्यधिक उधार, विशेष रूप से परिवारों द्वारा, एक जोखिमपूर्ण आर्थिक स्थिति पैदा कर रहा है जो अन्य देशों में अनुभव किए गए वित्तीय संकट के समान हो सकता है।

भारत में ऋण वृद्धि की वर्तमान स्थिति क्या है?

भारत में ऋण वृद्धि तीव्र गति से हो रही है, विशेष रूप से घरेलू क्षेत्र में, जो 25% से 30% की वार्षिक दर से बढ़ रही है।

2023 में, अंतर्राष्ट्रीय मुद्रा कोष (आईएमएफ) ने मजबूत बैंक ऋण और कम गैर-निष्पादित परिसंपत्तियों के लिए भारत के वित्तीय क्षेत्र की प्रशंसा की।

मार्च 2024 में नेशनल काउंसिल ऑफ एप्लाइड इकोनॉमिक रिसर्च द्वारा की गई समीक्षा में पिछले वर्ष की तुलना में बैंक ऋण में 20% की वृद्धि देखी गई, जिसमें व्यक्तिगत ऋणों में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई।
ऋण में वृद्धि मुख्य रूप से उत्पादक निवेशों के बजाय उपभोक्ता व्यय की ओर निर्देशित है, जिससे आर्थिक कमजोरियां बढ़ रही हैं।

इस तीव्र ऋण विस्तार से जुड़े जोखिम क्या हैं?

वित्तीय अस्थिरता : ऐतिहासिक रूप से तेज ऋण वृद्धि वित्तीय संकटों को जन्म देती है। पिछली तेजी तब समाप्त हो गई जब नए ऋण पुराने ऋणों को कवर नहीं कर सके।

असुरक्षित उधार : लगभग एक चौथाई घरेलू ऋण असुरक्षित हैं, जिससे वित्तीय प्रणाली पर दबाव बढ़ रहा है। क्रेडिट कार्ड ऋण 2011 में 20 मिलियन कार्ड से बढ़कर 2024 में 100 मिलियन हो गया।

आर्थिक संकुचन : उच्च ऋण बोझ घरेलू खर्च को कम करता है, जिससे आर्थिक मंदी आती है। भारतीय परिवारों का ऋण-सेवा-से-आय अनुपात 12% है, जो विश्व स्तर पर सबसे अधिक है।

अकुशल ऋण : वित्तीय संस्थाएँ उत्पादक निवेशों के बजाय उपभोक्ता ऋणों पर ध्यान केंद्रित करती हैं। जब उपभोक्ता खर्च धीमा हो जाता है तो इससे आर्थिक मंदी आ सकती है।

नौकरी की कमी : वर्तमान में जारी नौकरी संकट और भी बदतर हो जाएगा, जिससे अधिक लोग कृषि की ओर लौटेंगे, जो कि गहन आर्थिक प्रतिगमन और बढ़ती असमानता को दर्शाएगा।

क्या किया जाए?

वित्तीय विनियमन में सुधार : वित्तीय संस्थानों के बीच दुष्ट व्यवहार को रोकने के लिए निगरानी को मजबूत करना आवश्यक है। असुरक्षित ऋणों में वृद्धि, जो घरेलू ऋणों के एक चौथाई के करीब है, एक खराब विनियमित वित्तीय क्षेत्र को इंगित करता है। फिनटेक कंपनियों ने घरों को उच्च ब्याज वाले ऋण देने में अग्रणी भूमिका निभाई है, जिससे वित्तीय तनाव में योगदान मिला है।

रुपया कमजोर होना : कमजोर विनिमय दर निर्यात को बढ़ावा दे सकती है, जिससे आर्थिक मंदी को कम करने में मदद मिलती है। ऐतिहासिक डेटा से पता चलता है कि तेज ऋण वृद्धि और अधिक मूल्यांकित विनिमय दर एक घातक संयोजन है।

रोजगार सृजन पर ध्यान दें : स्थायी आर्थिक विकास सुनिश्चित करने के लिए नौकरियों की गहरी कमी को दूर करें। वर्तमान नीतियों के कारण अधिक श्रमिक कृषि की ओर लौट रहे हैं, जिससे रोजगार-समृद्ध विकास की तत्काल आवश्यकता पर प्रकाश डाला गया है।

प्रारंभिक परीक्षा के संभावित प्रश्न (Prelims Expected Question)

प्रश्न: भारत की ऋण वृद्धि के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार करें:

1. भारत में घरेलू क्षेत्र में ऋण वृद्धि 25% से 30% की वार्षिक दर से बढ़ रही है।
2. हाल ही में प्रकाशित आंकड़ों के अनुसार पिछले वर्ष की तुलना में बैंक ऋण में 20% की वृद्धि देखी गई।

उपर्युक्त में से कौन सा/से कथन सत्य है/हैं?

(a) केवल 1 (b) केवल 2
(c) 1 और 2 दोनों (d) न तो 1 न ही 2

Que. Consider the following statements with reference to India's credit growth:

1. Credit growth in the household sector in India is increasing at an annual rate of 25% to 30%.
2. According to recently published data, an increase of 20% was seen in bank lending as compared to last year.

Which of the above statements is/are correct?

(a) Only 1 (b) Only 2
(c) Both 1 and 2 (d) Neither 1 nor 2

उत्तर : C

मुख्य परीक्षा के संभावित प्रश्न व प्रारूप (Expected Question & Format)

प्रश्न: भारत में ऋण वृद्धि की वर्तमान स्थिति की चर्चा करें साथ ही उससे जुड़े जोखिमों का भी उल्लेख करें।

उत्तर का दृष्टिकोण :

- उत्तर के पहले भाग में भारत में ऋण वृद्धि की वर्तमान स्थिति की चर्चा करें।
- दूसरे भाग में वर्तमान ऋण वृद्धि से जुड़े जोखिमों का उल्लेख करें।
- अंत में अपने सुझाव देते हुए निष्कर्ष दें।

नोट : अभ्यास के लिए दिया गया मुख्य परीक्षा का प्रश्न आगामी UPSC मुख्य परीक्षा को ध्यान में रखकर बनाया गया है। अतः इस प्रश्न का उत्तर लिखने के लिए आप इस आलेख के साथ-साथ इस टॉपिक से संबंधित अन्य स्रोतों का भी सहयोग ले सकते हैं।